Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1470–1474

BILASPUR DISTRICT STAY OF HISTORICAL PERSONALITY

ऐतिहासिक व्यक्तित्व का बिलासपुर जिला प्रवास

Mahesh Kumar Shukla [1], Jeevan Lal Jaiswal [2]

[1] Associate Professor (History), Dr. C.V. Raman University, Kargi Road Kota, Bilaspur (Chhattisgarh)
[2] Research Scholar (History), Dr. C.V. Raman University, Kargi Road Kota, Bilaspur (Chhattisgarh)

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.3307

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Bilaspur, a city on the banks of Arpa river, is a culturally and historically rich city. The beauty of the city, like an island of peace full of diversity, delights the mind. The land of Bilaspur is geographically situated at an average height of 264 meters above sea level. The life-giving Arpa river irrigates the soil here and increases its fertility. The historical environment here gave birth to many revolutionaries who overthrew the British colonial power. From ancient times to the modern era, the land of Bilaspur attracted outsiders. This attraction was due to the historical culture, the environment of adjustment and the power of assimilation here.

Hindi: अरपा नदी का तटीय शहर बिलासपुर सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध नगर है। विविधताओं से भरपूर शांति के टापू की भांति शहर की छटां मन को आनंदित करता है। बिलासपुर की धरती भौगोलिक दृष्टि से समुद्री तल से 264 मीटर की औसत उंचाई पर अवस्थित है। जीवनदायिनी अरपा नदी यहां की मिट्टी को सींचते हुए उपजाउपन में वृद्धि करती है। यहां के ऐतिहासिक परिवेश ने कई क्रांतिकारियों को जन्म दिया जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेका था। प्राचीन काल से आधुनिक युग तक बिलासपुर की धरती ने बाहरी लोगो को आकर्षित किया यह आकर्षण यहां के ऐतिहासिक संस्कृति, समायोजन का वातावरण एवं आत्मसात करने की शक्ति इसका महत्वपूर्ण कारक था।

Keywords: Historical Personality, Historically Rich City, Historical Culture, ऐतिहासिक व्यक्तित्व, ऐतिहासिक रूप से समृद्ध नगर, ऐतिहासिक संस्कृति

1. प्रस्तावना

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक छत्तीसगढ़ के बिलासपुर क्षेत्र में अलग-अलग राजवंशों ने शासन किया। इस बीच देश एवं विदेश के विद्वानों-महापुरुषों ने बिलासपुर प्रवास हेतु कुछ समय व्यतीत किया। इनके आगमन के पीछे धार्मिक-सामाजिक एवं राजनीतिक कारण निहित थे। 629 ई. में विदेशी यात्री हवेनसांग ने भारत की यात्रा की तथा 639 ई. में छत्तीसगढ़ के सिरपुर एवं मल्हार की यात्रा पर आये इस समय छत्तीसगढ़ में पाण्डूवंशीय शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन का शासन था। हवेनसांग ने छत्तीसगढ़ की यात्रा अपने दक्षिण भारत के यात्रा की दौरान किया था अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने बुद्ध की मूर्तियां, बौद्ध विहार एवं स्तूप की चर्चा की जिसकी पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्यों से होती हैं। हवेनसांग ने सिरपुर के पश्चात अल्पसमय की यात्रा में मल्हार पहुँचा था पुरातात्विक साक्ष्यों से इसकी जानकारी मिलती है। उन्होंने इस क्षेत्र को कियासलो नाम दिया था। प्रसिद्ध चीनी यात्री हवेनसांग ने दक्षिण कोसल के बारे में वर्णन करते हुए लिखा है कि यहां दस हजार बौद्ध भिक्षु निवास करते थे सौ विहार एवं सत्तर देव मंदिर भी थे। इस प्रकार हवेनसांग का दक्षिण कोसल यात्रा तात्कालीन बौद्ध संस्कृति की महत्ता को करती है। वे बुद्ध एवं बौद्ध धर्म से संबंधित स्थलों की यात्रा पर आए थे।

मराठा शासन काल में सूबा शासन के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के प्रथम सूबेदार महीपत राव दिनकर के शासनकाल में यूरोपीय यात्री जार्ज फारेस्टर 17 मई 1790 को रायपुर आया था वह रायपुर के पश्चात् रतनपुर गया और प्रत्यक्षतः वर्णन किया उन्होंने लिखा है कि रतनपुर एक सुंदर प्रदेश है यहां की भूमि उपजाऊ है तथा धान की उपजाऊ काफी मात्रा में होती है रतनपुर से प्राप्त होने वाली राजस्व की राशि लगभग तीन लाख रूपये थी। रायपुर के

संदर्भ में फारेस्टर ने लिखा है कि रायपुर एक बड़ा शहर है और यहां व्यापारी एवं धनाढ़य लोग निवास करते हैं यहां एक किला है जिसका ऊपरी हिस्सा मिट्टी एवं नीचला हिस्सा पत्थर से बना है। इसके पांच दरवाजे हैं तथा किले के आसपास सुंदर तालाब है। जार्ज फारेस्टर ने अपने यात्रा के दौरान मराठा सूबेदार महीपत राव दिनकर के शासन प्रबंध के बारे में विचार प्रस्तुत किया उन्होंने अधिक उपजाऊ क्षेत्र होने एवं राजस्व की कम राशि के संदर्भ में विचार रखा था संभवतः महीपतराव के शासनकाल में नागपुर के भोसला शासकों के उम्मीद के अनुसार राजस्व की उगाही नहीं की जा रही थी इसलिए उन्हें सूबेदार के पद से हटाकर विटठलराव दिनकर को पदस्थापित कर दिया।

यूरोपीय यात्री कैप्टन ब्लंट मराठा सूबेदार विट्ठलराव दिनकर के शासनकाल में 13 मई 1795 को रतनपुर आया था तात्कालीन समय में रतनपुर की समृद्धि थी क्योंकि यह मराठा शासकों की राजधानी थी। कैप्टन ब्लंट ने रतनपुर राज्य के संदर्भ में वर्णन किया है कि रतनपुर मराठा सूबेदार का निवास स्थान था यह छत्तीसगढ़ की राजधानी थी। उन्होंने आगे लिखा है मेरे उम्मीद में रतनपुर की कल्पना एक बड़े शहर के रूप में थी। लेकिन यह सबकुछ मेरे सोंच से विपरीत था मुझे एक धरासायी होता हुआ गांव प्रतीत हुआ था। रतनपुर में निर्मित सुबेदार विटठल पंडित का निवास स्थान बेहद साधारण निर्मित था यह खपरैल का बना प्रतीत हुआ इसके साथ ही अन्य लोगों की हजारों की संख्या में झोपड़िया विद्यमान थी रतनपुर का यह दृश्य एक साधारण ग्राम से अधिक प्रतीत नहीं होता। कैप्टन ब्लंट ने रतनपुर की यात्रा के साथ रायपुर की यात्रा की थी उन्होने रायपुर को एक भव्य शहर बताया था कैप्टन ब्लंट की यात्रा रतनपुर को ग्रामीण परिवेश के रूप में दिखाया गया हैं।

यूरोपीय यात्री कोलब्रुक ने छत्तीसगढ़ की यात्रा मराठा सुबेदार केशव गोविंद के शासन काल में 1797-1808 के मध्य किया था। उन्होंने अपनी रतनपुर की यात्रा के दौरान लिखा कि रतनपुर प्रवेश के पूर्व ही सुबेदार केशव गोविंद ने नगर से 3-4 मील पहले स्वागत किया। रतनपुर छत्तीसगढ़ के उत्तर में अवस्थित एक महत्वपूर्ण रहा है। जिस प्रकार दक्षिण में रायपुर है यह घनी आबादी वाला शहर है यहां की इमारतें पत्थरों से बनी है यहां लगभग 700 जलाशय हैं यहां धान की खेती की अच्छी, ऊपज है जमीन को मापकर राजस्व का लगान निधारित किया जाता है। यह हलों के आधार पर निर्धारित होता है। प्रति हल के पीछे 10-16 रूपये के बीच निर्धारित था शहर के आसपास टेकरियां है जो यहां के वातावरण को मनोरम बनाए हुए हैं।

चूंकि बिलासपुर जिला क्षेत्र ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था यह क्षेत्र प्रमुख मार्ग पर स्थित था। मराठा काल में शिवाजी ने रतनपुर की यात्रा की। शिवाजी जब औरंगजेब के कैद में थे तब वहां से हृदय वेश में निकल गए। 13 अगस्त 1966 को सुबह औरंगजेब के पहरेदारों ने शिवाजी को देखा था उसके बाद शिवाजी अपने पुत्र के साथ सफलतापूर्वक वहां से निकल गए। शिवाजी ने अपने पुत्र संभाजी को लेकर आगरा से मथुरा पहुंचे वहां उसे दासोजी पंत के यहां छोड़ दिया और कृष्ण जी पंत के साथ फतेहपुर के पास यमुना पार किया उनके निकल जाने से युगल सेना दक्षिण मार्ग पर खोज कर रही थी। शिवाजी इटावा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस होते हुए मिर्जापुर से सरगुजा रियासत पहुंच गये यहां से वे कुछ समय के लिए रतनपुर प्रवास पर थे तथा रतनपुर से रायपुर चंद्रपुर, चिन्नूर, करीमगंज, मुलबर्गा, मंगोलबेड़ा होते हुए 1966 रायगढ़ पहुंचे।

सन् 1918 में नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता कविगुरू श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी बिलासपुर रेलवे प्टेशन में 6 घण्टे प्रतिक्षालय में बिताये थे। वे 23 वर्षीय बीनू के साथ यात्रा में थे उन्हें बिलासपुर स्टेशन से गाड़ी बदलना था इसी दौरान उन्होंने स्टेशन में समय व्यतीत किया। इस बीच उनके अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने एवं बीनू और सफाई कर्मी के बीच वार्ता हुई। टैगौर जी बिलासपुर रेलवे स्टेशन के प्रतिक्षालय में एक हृदयस्पर्शी कविता फांकी, लिखी थी जो कि वर्तमान में स्टेशन के दीवार में विद्यमान है जो इस प्रकार हैं:-

फाँकी

तेईस वर्षीय बीनू को जब बीमारी ने घेरा, डाक्टर और दवाईयों को सहना
था बीमारी से भी अधिक कठिन भिन्न-भिन्न नाम, आकार प्रकार की,
दवा की बोतलों और गोलियों ने जमा जिलया था डेरा।
डेढ़ साल इलाज उपरांत भी जब वह हो गई अस्थि-पंजर, तब सलाह दी डॉक्टरों ने
'हवां पानी बदलने को कहीं लेकर जाओं बाहर।
ऐसे हुई बीनू की प्रथम रेल यात्रा, शादी के बाद पहली बार
ससुराल के घर बाहर निकलना।
संयुक्त परिवार के बंधनों में, घुटे-घुटे वातावरण में, खो रहा था जीवन संगीत
कभी कभार की मुलाकातें, घुटी-घुटी सी हंसी, और दबी-दबी सी होती बातें।
आज अचानक धरती जैसे नव वर-वधु का स्वागत करने,
आन खड़ी हो धारण करके, पूरे नभ की ज्योति।
बीनू की बड़ी-बड़ी बीमार आँखों में उमड़ रहे थे भाव ऐसे,
देख लिया हो घूंघट हटाने पर, एक नूतन संसार जैसे।
रेल के बाहर भिक्षा मांगते भिखारी, अपने डिब्बे से कुछ सिक्के,

निकाल कागज में लपेट भिखारियों की तरह उछालती बीनू,
लगता था अपनी खुशी को बाट रही है।
टूटी-फूटी गृहस्थी के दुखों को पीछे छोड़ हम चिरंतन प्रेम की घोंरा में, मानों बहें जा रहे थे, बीन की खुशी और दानप्रियता से विश्व प्रेम के भाव हमारी यात्रा में, मानों भरे जा रहे थे।
बार-बार उसका तन-मन, ये सोच रोमांचित हो रहा था-
आज मेरे प्रियतम हैं केवल मेरे, नहीं दूसरे रिश्ते-राते हैं हमकों घेरें।
बिलासपुर स्टेशन से बदलनी थी गाड़ी।
जल्दी जल्दी उतरे।
प्रतीक्षालय में बिताना छः घंटे मुझे लगा एक युग सा भारी।
पर बीनू थी खुश, बोली- यह तो अच्छा है मौका।
उसकी खुशी थी अपार, और यात्रा मानो एक बंसी की धुन,
जिस पर थिरक रहा था, उस का तन-मन।
उस के खुशी भरे हाव-भाव हो रहे थे, उसके आनंद के साथ,
एकाकार।
प्रतीक्षालय का द्वार खोल, वह बोली- देखों, वह दौड़ती घोड़ा-गाड़ियाँ,
उस घोड़े की शावक की भरी-भरी चिकनी देह, उसकी माँ की आंखों से
छलकता स्नहे।
और देखों, उधर सीधी ढलाना वाले तालाब से लगा
छोटे छोटे पौधें के झुरमुट में चारों तरफ से घिरा एक घर-
क्या यह स्टेशन बाबू का घर हैं? अहा। कितना सुंदर।
मैंने वेटिंग रूम में बिस्तर बिछाया।
बीनू को आराम से सोने को समझाया।
और प्लेटफार्म की कुर्सी खींच पास तीन घंटे में गुजर गई थी
कितनी ही माल व यात्री गड़ियाँ।
सहसा प्रतीक्षालय के अंदर से बीनू ने पुकारा-
जरा अंदर आओ, तुम्हे कुछ है बताना।
अंदर खड़ी थी एक हिन्दुस्तानी लड़की, उसने देखा मेरी ओर, सलाम किया
और खड़ी हो गई प्लेटफार्म पर आ एक स्तम्भ के सहारे।
बीनू बोली उसका नाम है रूकमणी।
उधर कुंए के पास वाली झोपड़ी की कतारों में है उसका घर,
उसके पति हैं कुली इसी स्टेशन पर।
कुछ वर्ष पहले उनके गाँव में आन पड़ी मुसीबत भारी,
अत्याचारी जमीदार ने छीनी जमीन सारी, छोड़ना पड़ा गाँव,
न रहा ठौर-ठाव ।
मैंने हंसकार बीच में टोका रूकमणी की कथा सुनते सुनाते
गाड़ी ही आकर निकल जाएगी, संक्षेप में बताने से क्या,
बात नहीं बना पाएगी, न ही होगी कोई हानि।
बीनू गुस्से से भवें तान कर बोली - क्यों संक्षेप में सुनाऊ?
ऑफिस के लिए थोड़े है जाना, फिर क्यूं है पूरी सुनने में परेशानी।

तो अपना अंग्रेजी उपन्यास छोड़ मैंने सुनी उस स्टेशन कुली की पूरी कहानी।
कुली की बेटी की होनी थी शादी दहेज में देने थे कंगन और चूड़ी
कैसे जुटाए इनके लिए पच्चीस रूपये रूकमणी को थी यही चिन्ता भारी।
और बीनू ट्रेन में चढ़ने से पहले देकर पूरे पच्चसी रूपये
चाहती थी हरना रूकमणी की चिन्ता सारी ये कैसी मूर्खता।
कही किसी ने कभी ऐसा है सुना? वह औरत थी शायद कोई सफाई वाली
प्रतिदिन वेटिंग रूम को साफ करने वाली उसे पच्चीस रूपये देने की सोंच
लगा मुझे कि ऐसे दान देते देते शीघ्र ही निकल जाएगा मेरा दिवाला
मैंने कहा, देखता हूँ।
पर मेरे पास तो है सौ का ही नोट कहां मिलेगा छुट्टा इसका।
बीनू बोली
टिकट ऑफिस में मिल जाएगा छुट्टा।
ठीक है देखता हूँ क्या कर सकता हूँ।
मैंने उस औरत को एक तरफ बुलाया, खूब डांटा फटकारा और धमकाया,
ठगती हो यात्रियों को, अभी कर दूं शिकायत तो हाथ से जाएगी नौकरी तुम्हारी
वह फुट-फुट कर रोई, पैरों में गिर गिड़गिड़ाई, तो देकर उसे रूपये दो
मैंने उससे छुट्टी पाई।
मंदिर की ज्योति धुंधला गई, अंततः बुझ गई।
दो माह बाद मैं वापिस घर जा रहा था।
एक बार फिर उतरा बिलासपुर स्टेशन पर पर इस बार एकदम अकेला।
अपने अंतिम क्षणों में बीनू मेरी चरण रच लेते हुए बोली थी।
भूल जाऊँ शायद सब कुछ, पर नहीं भूल पाऊंगी ये अंतिम दो मास
जो मेरे मांथे पर हमेशा अंकित रहेंगे ऐसे,
माँ लक्ष्मी की माँग में लगा सिंदूर जैसे।
इन दो महिनों ने, मेरी आत्मा को अमृत पिला दिया
बस याद रहा इतना, लेते हुए तुमसे विदा।
हे अन्तर्यामी भगवान, काश! मैं बीनू को बता पाता,
मैं दोषी हूँ तुम्हारा, उन दो महिनों की भेंट से
पच्चीस रूपये का ऋणी हूँ तुम्हारा।
देकर आज लाख रूपये भी रूकमणी को,
नहीं चुका सकता वह ऋण तुम्हारा।
बीनू को क्या पता कि उन दो महिनों में भी
जो वह साथ ले गई, छला था मैंने उसको।
बिलासपुर स्टेशन पर उतर पूछा हरेक से रूकमणी का अता-पता,
नहीं मिला कोई उत्तर, कोई नहीं जानता था रूकमणी को,
दिमाग पर जोर डालते हुए फिर पूछा- वही झमरू कुली की बीवी।
पता चला अब नहीं रहते वे यहां, कहाँ, मिलेंगे नहीं था किसी को पता।
स्टेशन मास्टर भी गुस्सा कर बोले- कौन जाने उनका पता?
टिकट बाबू हँसकर बोले- चले गए एक माह पहले

दार्जिलिंग, खसरूबाग या शायद अराकान।
पूछा मैंने- क्या कोई जानता है उसका पता?
क्रोध से फटकारा मुझे क्यों रखेगा कोई एक कुली का पता।
कैसे मैं समझाता सबको? लगता था जो उनको तुच्छ सा
था मेरे लिए कितने महत्व का।
केवल वही एक व्यक्ति दिला सकता था मुझे, मेरे विश्वास घात के भार से मुक्ति
इन दो महिनों ने मेरी आत्मा को अमृतमयी बना दिया।
बीनू के इन अन्तिम शब्दों की वाद कैसे भुला पाऊंगा?
मैं सदा उसका ऋणी रहूंगा अपने झूठ के अहसास से हमेशा ही घिरा रहूंगा।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय गांधी जी के छत्तीसगढ़ आगमन के दौरान 1933 में बिलासपुर प्रवास हुआ था। वे रायपुर से बिलासपुर सड़क मार्ग से 25 नवम्बर 1933 को पहुंचे। गांधी जी का बिलासपुर प्रवास का कार्यक्रम पहले से तय नहीं था किन्तु बिलासपुर के नेताओं के आग्रह पर वे अपने को तैयार हो गए। जनता को पता चलते ही रास्ते में गांधी जी के ऊपर फूल एवं सिक्कों की बारिश होता रहा वे जनदर्शन हेतु खुली गाड़ी से यात्रा करते हुए बिलासपुर पहुंचे उन्हें एक लकड़ी के कुर्सी में बैठाकर खुली गाड़ी के माध्यम से लाया गया था। उनके बिलासपुर पहुंचते ही बैरिस्टर छेदीलाल के नेतृत्व में जरहाभांठा चैक में लोगों ने उनका स्वागत किया। गांधी जी रात्रि में कुंजबिहारी अग्निहोत्री के गोंडपारा स्थित आवास में भोजन कर विश्राम किया दूसरे दिन सुबह बैरिस्टर छेदीलाल के निवास के सामने जनसभा को संबोधित किया यह स्थान गांधी जी के याद में गांधी चैक से नाम से जाना गया।

गांधी चैक पर सभा को संबोधन के पश्चात् शनिचरी पडाव में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने हरिजन उद्धार संख्या में गांधीजी के सभा दर्शन के लिए लोग पहुंचे थे गांधी जी के समापन के पश्चात् सभास्थल की ईंटे एवं गांधी जी के चरण पड़े धूल को लोगों ने समेटकर उठा लिया इस प्रकार लोगों के हृदय में गांधीजी रचे बसे थे। इसके बाद गांधीजी का कार्यक्रम देवकीनंदन चैक पर स्थित कंपनी गार्डन में हुआ यहां पर महिलाओं को भाषण दिया तथा आजादी की लड़ाई में अपना योगदान देने के लिए आहवान किया। सभा में उपस्थित महिलाओं ने एक हजार रूपये की थैली गांधी जी को भेंट की यह भेंट आजादी के लिए व्यय हेतु समर्पित किया किन्तु गांधीजी ने इस रकम को कम माना इसके बाद महिलाओं ने अपना प्रिय आभूषण जो उन्होंने पहना था, सबकुछ उतारकर गांधी जी को भेंट कर दी। यह दृश्य इतिहास के पन्नों में अनोखा भेंट था इस तरह का उदाहरण शायद पूरे विश्व में पहली बार हुआ होगा।

इस प्रकार गांधी जी का बिलासपुर प्रवास 25-26 नवम्बर 1933 इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों पर लिखा गया है। जब गांधीजी बिलासपुर आये थे तब संपूर्ण भारत में सविनय अवज्ञा आंदोलन का दौर था।

इस तरह छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिला ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है यहां विद्वानों एवं राजनीतिज्ञों का प्रवास इसकी महत्ता को दर्शाती है।

REFERENCES

अमरोहित, डॉ. गीतेश कुमार 2021 छत्तीसगढ़ का इतिहास, सरस्वती बुक्स भिलाई।
बेहार, डॉ. रामकुमार 2018 छत्तीसगढ़ का इतिहास छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी अकादमी रायपुर।
शर्मा, अरविंद 1999 छत्तीसगढ़ का इतिहास, अरपा पाकेट बुक्स, बिलासपुर।
शुक्ल, हीरालाल एवं अन्य 2018 समग्र छत्तीसगढ़, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर।
बेहार, डॉ. रामकुमार 2024 दक्षिण कोसल का इतिहास, एस. चंद कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली।
शर्मा, डॉ. प्रदीप कुमार 2020 छत्तीसगढ़ के अनमोल रत्न, सरस्वती बुक्स भिलाई।